भारत सरकार

वित्त मंत्रालय

आर्थिक कार्य विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1145

(जिसका उत्तर सोमवार, 02 दिसम्बर, 2024/11अग्रहायण, 1946 (शक) को दिया जाना है)

डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में गिरावट

1145. श्री दिनेश चंद्र यादवः

क्या **वित्त मंत्री** यह बताने कि कृपा करेंगे किः

(क) डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में लगातार गिरावट के क्या कारण है;

(ख) क्या यह सच है कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, विदेशी निवेश की कमी और शेयर बाजार से विदेशी निवेशकों द्वारा अधिक निकासी जैसे प्रमुख कारक रुपये के मूल्य में गिरावट के लिए उत्तरदायी है;

(ग) क्या अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपये के घटते मूल्य से आम जनता पर बोझ बढ़ेगा; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

वित्त राज्य मंत्री (श्री पंकज चौधरी)

(क)और (ख) भारतीय रुपये का मूल्य बाजार द्वारा (आईएनआर)निर्धारित होता है, जिसका कोई लक्ष्य या विशिष्ट स्तर या बैंड नहीं होता। डॉलर सूचकांक में उतारचढ़ाव-, पूंजी अंतर्वाह में रुझान, ब्याज दरों का स्तर, कच्चे तेल की कीमतों में उतारचढ़ाव-, चालू खाता घाटा आदि जैसे विभिन्न घरेलू और वैश्विक कारक भारतीय रुपये (आईएनआर) की विनिमय दर को प्रभावित करते हैं।

वर्तमान कैलेंडर वर्ष सीवाई)) 2024 के दौरान, 19 नवंबर, 2024 तक अमेरिकी डॉलर यूएसडी)) की तुलना में भारतीय रुपये में (आईएनआर)1.4% की गिरावट आई है। भारतीय रुपये (आईएनआर) के इस अवमूल्यन का प्रमुख्य कारण अमेरिकी डॉलर की ब्रॉड बेस्ड स्ट्रेंथ रही है। कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान, दिनांक 19 नवंबर, 2024 तक डॉलर सूचकांक में लगभग 4.8% की वृद्धि हुई है। हाल ही में, डॉलर सूचकांक दिनांक 22 नवंबर, 2024 को 108.07 के अंक पर पहुंच गया, जो एक वर्ष से अधिक समय के लिए इसका अधिकतम स्तर है, जिससे उभरते बाज़ारों की मुद्राओं पर दबाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक तनाव और अमेरिकी चुनाव परिणामों को लेकर अनिश्चितता ने भी मुश्किलें बढ़ाईं हैं।

इसके बावजूद, भारतीय रुपया सबसे बेहतर निष्पादन करने वाली एशियाई मुद्राओं में से एक बना हुआ है। इसकी तुलना में, जापानी येन और दक्षिण कोरियाई वॉन जैसी प्रमुख एशियाई मुद्राओं में 19 नवंबर, 2024 तक क्रमशः 8.8% और 7.5% की गिरावट आई है। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश पाउंड जीबीपी)) के अलावा सभी जी10 मुद्राओं में कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान 4.0% से अधिक की गिरावट आई है।

भारतीय रुपये की सापेक्ष स्थिरता भारत की सुदृढ़ और समुत्थानशील आर्थिक फांडामेंटल, व्यापक आर्थिक और वितीय स्थिरता का प्रमाण है।

(ग (और (घ) मुद्रा के अवमूल्यन से निर्यात में प्रतिस्पर्धा बढ़ने की संभावना है, जिसका अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, अवमूल्यन से आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती हैं। विनिमय दर मूल्यह्रास का घरेलू कीमतों पर और परिणामस्वरूप नागरिकों पर समग्र प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय वस्तुओं की कीमतों के घरेलू बाजार को प्रभावित करने की सीमा पर निर्भर करता है।

****